प्रश्न 1. महाकवि कालिदास प्रणीत रघुवंशम महाकाव्य के प्रथम सर्ग की कथावस्तु लिखें।

उत्तर– महाकवि कालिदास ने रघुवंश के प्रथम सर्ग में रघुवंशियों की सामान्य प्रशंसा करते हुए राजा का आदर्श प्रस्तुत किया है। वे आजीवन, शुद्ध चरित्रवाले, फल प्राप्ति पर्यन्त कर्म करने वाले समुद्र तक फैली पृथ्वी के पालक, स्वर्ग तक अपना रथ ले जाने वाले, वैदिक विधान के अनुसार यज्ञ का सम्पादन करने वाले, याचिकों को मुँह माँगा दान करने वाले, अपराधानुसार दण्ड देने वाले, अवसरानुकूल कार्य करने वाले, दान के लिए धन का संग्रह करने वाले, सत्य की रक्षा के लिए मितभाषी, सन्तानोत्पत्ति के लिए विवाह करने वाले राजा थे।

इसी उज्ज्वल वंश में विविस्वान के पुत्र प्रथम मनु थे। उन्हीं के वंश में सबको सुख प्रदान करने वाले शुद्ध चरित्रवान् राजा दिलीप हुए। राजा दिलीप एक महान् प्रतापी क्षत्रिय धर्म के आदर्श पुरुष थे। वे प्रभावशाली थे। उनमें शौर्य के साथ-साथ शास्त्रों का भी पर्याप्त ज्ञान था। राजा दिलीप न्याय के लिए जितने कठोर थे, उतने ही वे दयालु भी थे। जिस प्रकार सूर्य धरती से पानी लेता है किन्तु उससे अधिक जल वृष्टि कर देता है, उसी प्रकार राजा दिलीप भी प्रजा से कर लेते थे, किन्तु प्रजा को उससे अधिक मात्रा में धन दे देते थे। राजा दिलीप आदर्श महापुरुष और राजा के रूप में अपनी प्रजा को संतान की तरह सुख प्रदान करने वाले सच्चे पिता थे। इनके राज्य में चोरी आदि नहीं होती थी। इनकी धर्मपत्नी मगध वंश के राजा की पुत्र सुदक्षिणा थी। वह भी गुणवती थी। किन्तु राजा को पुत्र नहीं हुआ, वे सदैव पुत्रप्राप्ति की कामना करते थे।

राजा दिलीप अपने मन्त्रियों के कन्धों पर राज्य का भार छोड़कर पुत्र प्राप्ति के लिए कौन-सा उचित उपाय है, यह पूछने के लिए अपनी पत्नी सुदक्षिणा को लेकर कुलगुरु वशिष्ठ जी के आश्रम में गये। यहाँ उन्होंने मृगों, ऋषियों तथा शान्तमय वातावरण को देखा। आश्रम में प्रवेश करते समय राजा ने द्वार पर नीचे उतरकर रानी सुदक्षिणा को भी हाथ का सहारा देकर रथ से नीचे उतारा। ऋषियों ने उनका स्वागत किया। आश्रम में यज्ञ सम्पन्न हो चुका था, अतः वे वशिष्ठजी के पावन-दर्शन के लिए उनके पास गये। जहाँ उन्होंने गुरु पत्नी अरुन्धती को कुलगुरु के पीछे उसी प्रकार बैठे हुए देखा जिस प्रकार यज्ञाग्नि की पीछे स्वाहा विद्यमान

होती है। राजा दिलीप ने वशिष्ठ जी से वार्तालाप प्रारम्भ किया, और उन्होंने कहा! राज के सातों अङ्ग सकुशल है। किन्तु मुझे पुत्र का सुख प्राप्त नहीं है। पुत्र के अभाव में पितरों को जल तर्पण करना कैसे सम्भव होगा? मेरे पितर भी पितृ-लोक में इसी बात से दुःखी हैं। राजा ने कोई उचित उपाय बतलाने के लिए कुलगुरु वशिष्ठजी से निवेदन किया।

राजा दिलीप की बात को सुनकर कुलगुरु वशिष्ठजी ने योग विद्या से ध्यान लगाकर पुत्रोत्पत्ति के बाधक तत्त्व को जानकर राजा दिलीप से कहा—स्वर्ग से लौटते समय आपने कल्पवृक्ष के नीचे बैठी हुई कामधेनु को प्रणाम नहीं किया, अतएव कामधेनु ने नाराज होकर शाप दिया कि ''मेरी सन्तति (पुत्री) की आराधना किये बिना तुम्हें सन्तान की प्राप्ति नहीं होगी''। जब तक कुलगुरु का राजा से संवाद चल ही रहा था कि उस समय आरक्त वर्ण (लाल रंग) कामधेनु की सन्तति नन्दिनी वहाँ आ गयी। वशिष्ठजी ने यह शुभ संकेत माना और राजा से कहा, आप दोनों पति-पत्नी नन्दिनी की सेवा करें। इसके प्रसन्न होने पर जिस प्रकार आपके पिता को आप जैसा सुयोग्य पुत्र प्राप्त हुआ उसी प्रकार आप को भी आप जैसा तेजस्वी पुत्र प्राप्त होगा। राजा ने इस कार्य को स्वीकार कर लिया।

राजा दिलीप ने कुलगुरु की आज्ञा ग्रहण करने के बाद नन्दिनी को प्रसन्न करने के लिए व्रत प्रारम्भ कर दिया। आश्रम में उन राजा और रानी के रहने के लिए राजसी सुविधायें न देकर आश्रमवासी जनों के लिए जो उचित व्यवस्था थी, वही व्यवस्था दी गयी।

महर्षि वशिष्ठ की आज्ञा पाकर राजा दिलीप और रानी सुदक्षिणा ने कामधेनु की पुत्री नन्दिनी गाय की सेवा प्रारम्भ कर दिया। प्रातः शीघ्र उठकर रानी सुदक्षिणा आश्रम के द्वार तक राजा और नन्दिनी को ले जाती थी, वहाँ नन्दिनी की पूजाकर दोनों को विदा करती थी। राजा नन्दिनी को लेकर अकेले वन में चराने के लिये ले जाने लगे। वह अपने सेवकों को साथ नहीं लिया। चूँकि राजा एक प्रकार का तप कर रहे थे अतः इस पवित्र कार्य में किसी की सहायता लेना उचित नहीं समझे और अकेले ही सभी आपत्तियों का सामने करने को तैयार हो गये। वन में पहुँच पाने पर वह गाय की अपूर्व भक्तिभाव से सेवा करने लगे—'जब नन्दिनी उठती थी तब वह उठते थे, जब वह सोती थी तब वह सोते थे, जब वह जागती थी तब वह जागते थे। इस प्रकार राजा दिलीप प्रतिदिन राजसी ठाठ-बाट को छोड़कर प्रातः नन्दिनी गाय को वन में ले जाते थे और शाम को जब आश्रम में लौटते थे तब द्वार पर रानी सुदक्षिणा उनका स्वागत करती थी तथा नन्दिनी की पूजा करती थी।'

2026.02.13 09:23